ये अव्यक्त इशारे

कर्मयोगी बनो

3-06-2024

जैसे कर्म स्वतः ही चलते रहते हैं, कर्मेन्द्रियों को नेचुरल अभ्यास है। ऐसे ही बुद्धि को याद का नेचुरल अभ्यास होना चाहिए। इन कर्मेन्द्रियों का आदि-अनादि अपना-अपना कार्य है। हाथ को हिलाने व पाँव को चलाने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, उसी प्रमाण ब्राह्मण जीवन का तथा इस संगमयुगी जीवन में बुद्धि का निजी कार्य व जन्म का कार्य है बाप को याद करना। जीवन का जो निजी कार्य होता है वह नेचुरल और सहज ही होता है। तो अपने को सहज कर्मयोगी अनुभव करो।

Be a karma yogi.

Just as actions continue naturally, and the physical organs have the natural practice, in the same way, the intellect also has to have the natural practice. These physical organs have their own original and eternal tasks to perform. You don't have to make any effort to move your hands or your feet. In the same way, in this Brahmin life, that is, in the confluence-aged life, the real work of the intellect or the work of your life is to remember the Father. The original (real) work of your life is natural and easy. So, experience yourself to be an easy karma yogi.